॥ श्री गणेशाय नमः॥

मंगल (भौम)

मङ्गल का स्वरूप :- भगवान् मंगल की चार भुजाएँ हैं, इनके शरीर के रोम लाल हैं, हाथ में अभयमुद्रा, त्रिशूल, गदा और वरमुद्रा है, लाल वस्त्र और लाल मालाएँ धारण कर रखी हैं, सिर पर स्वर्णमुकुट है, भगवान् मंगल देव का वाहन मेष (भेड़ा) है।
भगवान् मंगल पृथ्वी जी तथा विष्णु के पुत्र हैं।

मध्याह्नबली, क्षत्रिय वर्ण, चुष्पद-स्वामी, पुरुष, पप-स्वभाव, रक्त-वर्ण, वनचर-स्वामी, पित्त-प्रकृति, युवावस्था, दक्षिण-मुख, दग्धभूमि-स्वामी, तमो-गुणी, चपल तथा उदार।

मंगल ग्रह :- मेष तथा वृश्चिक राशि का स्वामी है। मकर के २८ अंश पर उच्च तथा कर्क के २८ अंश पर नीच का होता है। इसकी मूलत्रिकोण राशि मेष है। २८ वर्ष में भाग्योदय कारक होता है।

मंगल ग्रह :- गोचर में जन्म राशि से ३, ६, १०, ११ में शत्रु-नाश, भूमि-लाभ, राजा की कृपा, विजय आदि शुभफल देता है। १, २, ५, ७, ९ में मध्यम फलदायक या मिश्रित फलदायक तथा ४, ८, १२ में रुधिर-विकार जन्य कष्ट, मित्रो से मतभेद आदि अशुभ फल देता है।

मंगलवार व्रत विधि :- मंगलवार के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले ब्रह्ममुहुर्त में उठकर नित्यकर्म करने के बाद मंगल मन्त्र का जप करे एवं स्तोत्र का पाठ करे और सूर्यार्घ्य प्रदान कर, दिन में १२ से ३ बजे के अन्दर हलवा या चूरमा का भोजन करे, सूर्यास्त के बाद अन्न जल निषेध है, किन्तु गंगाजल आवश्यकतानुसार लिया जा सकता है। बुधवार के दिन सूर्यार्घ्य देने के बाद पारण करे।

मंगल ग्रह की शांति के लिए रुद्राभिषेक करना चाहिए।

दान पदार्थ :- ताम्बा, सोना, गेहूँ, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चन्दन, लाल पुष्प, कस्तूरी, मसूर की दाल, भूमि, मेष, दक्षिणा, वरण आदि।

धारणार्थ रत्न :- मूंगा।

धारणार्थ औषधि :- अनन्तमूल, नासाजिह्वा।

ध्यान :- रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटीं चतुर्भुजो मेषगतो गदाधरः।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा ममस्याद्वरदः प्रशान्तः॥
(रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः। चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः॥)

२१ भौम यन्त्रम्

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

तन्त्रसारोक्त मन्त्र :- ॐ अँ अङ्गारकाय नमः। जपसंख्या १०,०००

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र :- ॐ क्राँ क्रीँ क्रौँ सः भौमाय नमः।

बीजमन्त्र (पञ्जिका) :- ॐ ह्रँ श्रीँ भौमाय नमः।

मङ्गल गायत्री :- ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

पौराणिक जप मंत्र :- धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्ति हस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥

वैदिकमंत्र विनियोग [१]:- अग्निर्मूद्धेतिमन्त्रस्य विरूपाक्ष (विरुपाङ्गिरस) ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्रीछन्दः, भौमो देवता ककुद्वरीजम् भौमप्रीतये जपे विनियोगः।

अथ न्यास [२]:- ॐ विरूपाक्षऋषये नमः शिरसि।
ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे।
ॐ भौमदेवतायै नमः हृदये।
ॐ ककुद्वीजाय नमः गुह्ये।
ॐ भौमप्रीतये जपे विनियोग नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास [३]:- ॐ अग्निर्मूर्द्धा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ दिवः ककुदिति तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ पति पृथिव्याऽअयमिति मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ अपामित्यनामिकाभ्यां नमः।
ॐ रेताꣳ सीते कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ जिन्वतीति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास [४]:- ॐ अग्निर्मूर्द्धेति हृदयाय नमः।
ॐ दिवः ककुदिति शिरसे स्वाहा।
ॐ पतिः पृथिव्याऽअयमिति शिखायै वषट्।
ॐ अपां कवचाय हुम्।
ॐ रेताꣳ सीति नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ जिन्वतीत्यस्त्राय फ़ट्।

वैदिक जप मन्त्र :- ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्व्या अयम्।
अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति॥ ॐ भौमाय नमः॥

अङ्गारकस्तोत्रम्

विनियोग-अस्याङ्गारकस्तोत्रस्य बिरूपाङ्गिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्री छन्दः, भौमप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

अङ्गारकः शक्तिधरो लोहिताङ्गो धरासुतः। कुमारो मङ्गलो भौमो महाकायो धनप्रदः॥१॥
ऋणहर्ता दृष्टिकर्ता रोगकृद्रोगनाशनः। विद्युत्प्रभो व्रणकरः कामदो धनहृत् कुजः॥२॥
सामगानप्रियो रक्तवस्त्रो रक्तायतेक्षणः। लोहितो रक्तवर्णश्च सर्वकर्मावबोधकः॥३॥
रक्तमाल्यधरो हेमकुण्डली ग्रहनायकः। नामान्येतानि भौमस्य यः पठेत्सततं नरः॥४॥
ऋणं तस्य च दौर्भाग्यं दारिद्र्यं च विनश्यति। धनं प्राप्नोति विपुलं स्त्रियं चैव मनोरमां॥५॥
वंशोंद्द्योतकरं पुत्रम् लभते नात्र शंसयः। योऽर्चदह्नि भौमस्य मङ्गलं बहुपुष्पकैः॥६॥
सर्वा नश्यन्ति पीडाश्च तस्य ग्रहकृता ध्रुवम्॥७॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे अङ्गारकस्तोत्रम् सम्पूर्णम्॥

मङ्गलकवचम्

विनियोग-अस्य श्रीमङ्गलकवचस्तोत्रस्य कश्यपऋषिः, अनुष्टप्छन्दः, अङ्गारको देवता, भौमप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटीं चतुर्भुजो मेषगतो गदाधरः।
धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदा ममस्याद्वरदः प्रशान्तः॥१॥
अङ्गारकः शिरो रक्षेन्मुखं वै धरणीसुतः। श्रवौ रक्ताम्बरः पातु नेत्रे मे रक्तलोचनः॥२॥
नासां शक्तिधरं पातु मुखं मे रक्तलोचनः। भुजौ मे रक्तमाली च हस्तौ शक्तिधरस्तथा॥३॥
वक्षः पातु वराङ्गश्च हृदयं पातु लोहितः। कटिं मे ग्रहराजश्च मुखं चैव धरासुतः॥४॥
जानुजङ्घे कुजः पातु पादौ भक्तप्रियः सदा। सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि रक्षेन्मे मेषवाहनः॥५॥
य इ दं कवचं दिव्यं सर्वशत्रुनिवारणम्। भूतप्रेतपिशाचानां नाशनं सर्वसिद्धिदम्॥६॥
सर्वरोगहरं चैवं सर्वसंपत्प्रदं शुभम्। भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणां सर्वसोभाग्यवर्द्धनम्।
रोगबन्धविमोक्षं च सत्यमेतन्न संशयः॥७॥

॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे मङ्गल कवचम् सम्पूर्णम्॥

---

[१] **विनियोग--** विनियोग करते समय एक छोटे ताम्बे के चम्मच या खर या आम के पत्ते से लुटिया में से गंगाजल युक्त पानी उठाए रखे और विनियोग के मन्त्र का अन्तिम शब्द **"विनियोगः"** बोलते समय चम्मच का पानी एक छोटी प्याली या प्लेट में उडल दे इस चम्मच को **"आचमनी"** कहते हैं।

[२] **अथ न्यासः --**तत्त्व मुद्रा से अर्थात् मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ के अग्र भाग को मिलाकर सिर आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... नमः शिरसि।
ॐ ..... नमः मुखे।
ॐ ..... नमः हृदये।
ॐ ..... नमः गुह्ये।
ॐ ..... नमः पादयोः।

[३] **करन्यासः** करन्यास एक ही समय में दोनो हाथों से करे।

ॐ ..... ऽङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (तर्जनी द्वारा अँगुठे के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... तर्जनीभ्यां नमः। (अँगुठे से तर्जनी के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... मध्यमाभ्यां नमः। (अँगुठे से मध्यमा के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... ऽनामिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से अनामिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से कनिष्ठिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे)

[४] **हृदयादिन्यासः** दाहिने हाथ की पांचो अंगुलियों से हृदय आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... हृदयाय नमः।

ॐ ..... शिरसे स्वाहा।

ॐ ..... शिखायै वषट्।

ॐ ..... कवचाय हुम्। (दोनों भुजा अर्थात् कन्धे के पास स्पर्श करे)

ॐ ..... नेत्रत्रयाय वौषट्। (दोनों नेत्रों और फिर ललाट के मध्य भाग का स्पर्श करे)

ॐ ..... ऽस्त्राय फ़ट्। (दायें हाथ को सर के ऊपर बायीं ओर से पीछे ले जाकर सर के दायीं ओर से आगे की ओर लाये, फिर बायीं हाथेली पर दायें हाथ की तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों से ताली बजाये)

Please send corrections to pawan2303@gmail.com